RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 205
दि. 29. 04. 2026
बुधवार
पाना : 04
किमत : 00.50 पैसा

पंजाब में शंभू बार्डर के पास रेलवे ट्रैक पर धमाका, संदिग्ध की मौत

चंडीगढ़,एजेंसी। पंजाब-हरियाणा बार्डर पर शंभू की सीमा में बीती रात दिल्ली-पटियाला रेलवे ट्रैक पर बम धमाका हुआ है। कहा जा रहा है कि जिस संदिग्ध ने विस्फोटक लगाया उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव के टुकड़े आज सुबह बरामद किए हैं। धमाके के कारण कई घंटे तक रेलवे ट्रैक बाधित रहा। यह धमाका पटियाला जिला के गांव बठोनियां के निकट जंगल में हुआ है। यहां रेलवे ट्रैक का कुछ हिस्सा घने जंगल में है। आतंकवाद के दौर में भी इस क्षेत्र में अकसर घटनाएं होती रही हैं।

पटियाला के एसएसपी वरूण शर्मा ने बताया कि बीती रात शंभू के निकट रेलवे ट्रैक पर धमाके की सूचना मिली। इसके बाद वह स्वयं, डीआईजी पटियाला रेंज, जीआरपी तथा आरपीएफ के अधिकारी मौके पर पहुंचे। जहां धमाका हुआ वहां गहरा गढ्ढा बन गया। स्थिति को देखते हुए रेलवे ट्रैक पर आवागमन को रोका गया। उन्होंने बताया कि इस घटना के संदिग्ध युवक की मौत हो गई। धमाके से ट्रैक को मामूली नुकसान हुआ , जिसे ठीक कर लिया गया है। पुलिस को कई अहम सुराग मिले हैं। एक मोबाइल फोन का सिम कार्ड भी मिला है। उसकी जांच की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि करीब एक सप्ताह पहले ही ई-मेल के जरिए पंजाब व हरियाणा में रेलवे ट्रैक को बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। ई-मेल में बाकायदा 24 अप्रैल को 8:11 मिनट पर अंबाला से लेकर दिल्ली तक रेलवे ट्रैक पर धमाके करने की धमकी दी गई थी।

भारत लाया गाया दाऊद इब्राहिम का करीबी सलीम डोला, दिल्ली में हो रही पूछताछ; आगे एनसीबी को सौंपा जाएगा

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों को एक बड़ी सफलता मिली है। कुख्यात ड्रग तस्कर और भगोड़े आतंकी दाऊद इब्राहिम के करीबी सलीम डोला को बीते दिनों तुर्किये के इस्तांबुल में गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद अब उसे भारत को प्रत्यर्पित कर दिया गया है। यह कार्रवाई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चलाए गए संयुक्त ऑपरेशन के बाद हुई है। मंगलवार तड़के एक विशेष विमान से उसे दिल्ली एयरपोर्ट लाया गया, जहां भारतीय खुफिया एजेंसियों ने उसे हिरासत में लिया। अब उससे दिल्ली में पूछताछ की जा रही है और आगे की जांच के लिए उसे मुंबई स्थित नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो को सौंपा जाएगा।

बता दें कि सलीम डोला को हाल ही में तुर्किये के इस्तांबुल में गिरफ्तार किया गया था।

मोदी ने सिक्किम में बच्चों के साथ फुटबॉल खेली

सोशल मीडिया पर कहा:एनर्जी से भर गया

राज्य के 50वें स्थापना दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए

गंगटोक, एजेंसी। पीएम नरेंद्र मोदी 2 दिन के सिक्किम दौरे पर हैं। उन्होंने मंगलवार सुबह गंगटोक में बच्चों के साथ फुटबॉल खेली। पीएम ने सोशल मीडिया पर फुटबॉल खेलते हुए तस्वीरें शेयर की। पीएम ने ङ्ग पर लिखा, 'इन बच्चों के साथ फुटबॉल खेलकर ऊर्जा से भर गया।'

आज मोदी राज्य के 50वें स्थापना दिवस समारोह के समापन कार्यक्रम में शामिल हुए। इसके अलावा उन्होंने 4000 करोड़ से ज्यादा की परियोजनाओं का

शिलान्यास भी किया।

पीएम मोदी ने कहा कि जब देश में राजनीतिक स्वार्थ के चलते भाषावाद, प्रांतवाद, ऊंच-नीच और देश में भेदभाव के लिए लगातार कोशिश हो रही है। आज सिक्किम ने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के दर्शन करा दिए।

पीएम ने पहले दिन रोड शो किया था:मोदी सोमवार शाम को सिक्किम पहुंचे थे। इसके बाद उन्होंने लिबिंग हेलिपैड से गवर्नर हाउस (लोक भवन) तक उन्होंने रोड शो किया। 16 मई 2025 को सिक्किम को राज्य बने 50 साल पूरे हुए थे। तब पीएम वर्चुअली 50वें स्थापना दिवस समारोह से जुड़े थे। मंगलवार को एक साल से चल रहे समारोह का समापन होगा।

मुंबई में दो सिक्योरिटी गार्ड्स पर पहलगाम जैसा हमला

धर्म पूछा, कलमा पढ़ने को कहा, मना करने पर चाकू मारे; एटीएस बोली- ये आतंकी अटैक

मुंबई ,एजेंसी। मुंबई के मीरा रोड में एक युवक ने दो सिक्योरिटी गार्ड्स से उनका धर्म पूछने के बाद चाकू से हमला कर दिया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी जैब जुबेर अंसारी (31) ने सोमवार सुबह करीब 4 बजे एक निर्माणाधीन इमारत के पास तैनात गार्ड्स को कलमा पढ़ने को कहा। उन्होंने मना किया तो आरोपी ने दोनों पर चाकू से हमला कर दिया।

घायल गार्ड्स राजकुमार मिश्रा और सुब्रतो सेन को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। यह हमला पिछले साल पहलगाम में हुए आतंकी हमले जैसा है। वहां भी आतंकियों ने पर्यटकों का धर्म पूछा था। कलमा न पढ़ने वालों को गोलियां मारी थीं।

- **CM बोले- आरोपी हिंदुओं पर हमला करना चाहता था:**घटना को लेकर महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि आरोपी जिहाद के नाम पर हिंदुओं को निशाना बनाना चाहता था। ष्टरू ने बताया कि यह मामला आत्म-उग्रवादीकरण (सेल्फ-रैडिकलाइजेशन) का लगता है। आरोपी के घर से कुछ किताबें और आपत्तिजनक सामान बरामद हुए हैं। वह अमेरिका में रहता था और हाल ही में भारत लौटा था। सीएम के मुताबिक, प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि वह कट्टरपंथी बन गया था और जिहाद के नाम पर हिंदुओं पर हमला करना चाहता था। इस मामले की जांच फिलहाल महाराष्ट्र एंटी-टेररिज्म स्क्वाड (ङ्घञ्जस्) और हृढ्ढ कर रही है।ATS ने सुरक्षा गार्डों पर हुए हमले की जांच शुरू कर दी है। सुरक्षा एजेंसियां इसे संभावित 'लोन वुल्फ' आतंकी हमला मान रही हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, आरोपी ने पहले गार्डों से रास्ता पूछा और फिर वापस आकर उनका धर्म पूछा।

- **आरोपी ने नोट्स में ISIS में शामिल होने की इच्छा जताई:**यह भी आरोप है कि आरोपी ने एक गार्ड को कलमा पढ़ने के लिए मजबूर किया और जब वह ऐसा नहीं कर पाया, तो आरोपी ने उस पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। पुलिस को आरोपी के घर कुछ हाथ से लिए नोट्स मिले हैं।सूत्रों के अनुसार, इन नोट्स में आरोपी ने ढ्ढस्ढ्ढस् में शामिल होने की इच्छा जताई थी। उसने सिक्योरिटी गार्ड्स पर हमले को किसी आतंकी संगठन में शामिल होने की दिशा में अपना पहला कदम बताया था।मामले की जांच कर रही महाराष्ट्र ATS इस घटना को आतंकी हमला मान रही है। ATS ने बताया कि आरोपी साइंस ग्रेजुएट है और कई साल तक अमेरिका में रहा था।

सुप्रीम कोर्ट में वकील बोले- मस्जिद सभी के लिए खुली

हिजाब धर्म में जरूरी, लेकिन स्कूल में नहीं पहन सकते ; कई परंपराएं कुरान में नहीं लिखीं

नई दिल्ली,एजेंसी। केरलम के सबरीमाला मंदिर सहित अन्य संप्रदायों के धार्मिक स्थलों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव से जुड़ी याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हो रही है। आज सुनवाई का 9वां दिन है।

मस्जिद दरगाह में महिलाओं के प्रवेश के खिलाफ दलील दे रहे एडवोकेट निजाम पाशा ने कहा कि कोई व्यक्ति हिजाब को धार्मिक रूप से अनिवार्य मान सकता है, लेकिन स्कूल के नियम अलग हो सकते हैं। मतलब धार्मिक विश्वास हमेशा संस्थागत नियमों से ऊपर नहीं होगा।

अगर किसी मोहल्ले की मस्जिद सबके लिए खुली हो तो भी कोई जाकर घंटी नहीं बजा सकता। आरती नहीं कर सकता, क्योंकि उस जगह की अपनी

धार्मिक मर्यादा है। कुरान बहुत संक्षिप्त है। उसमें हर प्रथा डिटेल में नहीं लिखी। पैगंबर की परंपरा भी धार्मिक प्रथा का हिस्सा है। मतलब सिर्फ किताब में लिखा होना ही 'जरूरी अधिकार' तय नहीं करता।23 अप्रैल को पिछली सुनवाई में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (AIMPLB) ने कोर्ट से कहा था कि इस्लाम महिलाओं को नमाज के लिए मस्जिद आने से नहीं रोकता, लेकिन यह बेहतर है कि वे घर पर ही इबादत करें।

यूपी का बांदा दुनिया में सबसे गर्म, पारा 47.6डिग्री

6 शहरों में तापमान 46डिग्री पार; केंद्र ने राज्यों से कहा- हीट स्ट्रोक यूनिट खोलें

नई दिल्ली/भोपाल/ जयपुर/ लखनऊ,एजेंसी। उत्तर प्रदेश और राजस्थान में सोमवार को गर्मी ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए। बांदा 47.6डिग्री तापमान के साथ दुनिया का सबसे गर्म शहर रहा। यहां इससे पहले 30 अप्रैल 2022 और 25 अप्रैल 2026 को सबसे ज्यादा 47.4डिग्री तापमान का रिकॉर्ड था।

राजस्थान के जैसलमेर में 46.6एष्ट तापमान दर्ज हुआ। यहां अब तक सबसे ज्यादा तापमान 18 अप्रैल 2025 में 46.3डिग्री था। मध्य प्रदेश के खजुराहो में पारा 46डिग्री पहुंच गया, जो पिछले 10 साल के दौरान सबसे ज्यादा है। इससे पहले एक दशक में यहां इतना तापमान दर्ज नहीं

हुआ।

जैसलमेर और खजुराहो के अलावा देश के कुल 6 शहरों में पारा 46एष्ट या उससे पार रहा। इनमें बाड़मेर (46डिग्री), वर्धा (46.5डिग्री), अमरावती (46.6डिग्री) और अकोला (46.3डिग्री) शामिल हैं। दिल्ली में बसों में ठंडा पानी रखा जाएगा, जबकि बस स्टॉप पर मुफ्त ठंडा पानी और ORS मिलेगा।

देश में बढ़ती गर्मी और हीटवेव के खतरे को देखते हुए केंद्र सरकार ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य संस्थानों में हीट स्ट्रोक मैनेजमेंट यूनिट शुरू करने के निर्देश दिए हैं।

उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में सड़क हादसा, दूल्हे के भाई समेत चार की मौत, नहीं हो सकी दुल्हन की विदाई

हमीरपुर,एजेंसी। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के कानपुर-सागर नेशनल हाइवे पर सोमवार रात हुए हादसे में चार बारातियों की मौत हो गई। मृतकों में सहबाला (दूल्हे का भाई) भी है। हादसे की खबर मिलते ही दोनों गांवों में मातम पसर गया। दुल्हन की विदाई नहीं हो सकी। यह हादसा एक तेज रफ्तार ट्रक की ईको वैन में सीधी टक्कर से हुआ। इसी वैन में दूल्हे का भाई और अन्य बाराती सवार थे। हादसे में तीन बराती भी घायल हुए है। । सूचना पाते ही डीएम अभिषेक गोयल व एसपी मृगांग शेखर पाठक मौके पर पहुंचे। ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस के अनुसार, हमीरपुर जिले के कुरारा थाना क्षेत्र के डामर गांव निवासी रमाकांत कुशवाहा की शादी महोबा जिले के कबरई थाना क्षेत्र के पहरा गांव निवासी संतराम कुशवाहा की पुत्री अंजू के साथ तय हुई थी। सोमवार रात बारात गांव से निकासी के बाद निजी वाहनों से कबरई जा रही थी। दूल्हे का भाई शशिकांत उर्फ आशीष (22) अपने रिश्तेदारों के साथ गांव के कमलेश यादव की ईको वैन से बारात जा रहा था। इको वैन मौदहा कोतवाली क्षेत्र के छिरका गांव के पास पेट्रोलपंप के सामने पहुंची तो कबरई से कानपुर जा रहे गिट्टी

से लदे ट्रक ने टक्कर मार दी।

पुलिस ने बतय कि इससे वैन के परखच्चे उड़ गए। हादसे में दूल्हे के भाई शशिकांत, मोहन पुत्र रामसेवक, कमल यादव व रिठारी गांव निवासी जितेन्द्र की मौके पर मौत हो गई। वहीं उरदना गांव निवासी दिलीप कुमार पुत्र गणेश, तिन्दुही गांव निवासी रोहित पुत्र राधेश्याम व डामर गांव निवासी बाबू गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पाते ही मौदहा कोतवाली प्रभारी संतोष सिंह मौके पर पहुंचे। इस दौरान डीएम और एसपी भी पहुंच गए। पुलिस ने वैन में फंसे घायलों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया।

हादसे में भाई और नाते-रिश्तेदारों की मौत की सूचना मिलते ही दूल्हा रो पड़ा और दुल्हान के गांव में मातम पसर गया ।

भारत का रक्षा खर्च 8.9 फीसदी बढ़ा, बना दुनिया का 5वां सबसे अधिक सैन्य खर्च वाला देश

नई दिल्ली ,एजेंसी। भारत दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा सैन्य खर्च करने वाला देश बन गया है। वर्ष 2025 में भारत का सैन्य खर्च 8.9 प्रतिशत बढ़कर 92.1 अरब डॉलर हो गया। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिपरी) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में वैश्विक सैन्य खर्च 2,887 अरब डॉलर तक पहुंच गया। यह लगातार 11वां साल है जब वैश्विक सैन्य खर्च में वृद्धि दर्ज की गई। सबसे ज्यादा खर्च करने वाले पांच देशों में अमेरिका, चीन, रूस, जर्मनी और भारत शामिल हैं, जिनका वैश्विक खर्च में कुल योगदान 58 प्रतिशत है।भारत के रक्षा खर्च में वृद्धि की एक बड़ी वजह पिछले मई में भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष बताया गया है, जिसमें लड़ाकू विमान, ड्रोन व मिसाइलों का

इस्तेमाल हुआ। इसी के चलते पाकिस्तान का सैन्य खर्च भी 11 प्रतिशत बढ़कर 11.9 अरब डॉलर हो गया। पाकिस्तान ने चीन से नए हथियार भी खरीदे। वैश्विक स्तर पर सैन्य खर्च का बोझ (जीडीपी के अनुपात में) 2.5 प्रतिशत तक पहुंच गया, जो 2009 के बाद सबसे अधिक है। प्रति व्यक्ति औसतन 352 डॉलर सैन्य खर्च किया गया। एजेंसी

अमेरिका का सैन्य खर्च 7.5 फीसदी घटा :रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका का सैन्य खर्च 7.5 प्रतिशत घटकर 954 अरब डॉलर रहा, जिसका कारण यूक्रेन को नई वित्तीय सहायता का न मिलना बताया गया। इसके विपरीत यूरोप में 14 प्रतिशत और एशिया व ओशिनिया क्षेत्र में 8.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की

गई।

चीन लगातार बढ़ा रहा रक्षा बजट :चीन दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सैन्य खर्च करने वाला देश है। उसने 2025 में अपना रक्षा बजट 7.4 प्रतिशत बढ़ाकर 336 अरब डॉलर कर दिया।यह लगातार 31वां वर्ष है जब चीन ने रक्षा खर्च बढ़ाया है। रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव व सुरक्षा चिंताओं के चलते देशों ने हथियारों व रक्षा तैयारियों पर खर्च बढ़ाया है।

गुजरात निकाय चुनाव बीजेपी की सुनामी! उड़ गई कांग्रेस-आप!

हास्य पर बंदिश : कॉमेडियनों को धमकाना निंदनीय कृत्य

संपादकीय

आज सूचना क्रांति और सोशल मीडिया के दौर में पूरी दुनिया में गहरे तंज करती डिजिटल सामग्री का उफान है। जो दुनिया की भौगोलिक सीमाओं और सत्ता के शिकंजे से मुक्त होकर स्वतंत्र प्रवाह लिए हुए है। लेकिन इसके बावजूद देश में स्टैंडिंग कॉमेडियनों और व्यंग्यकारों के लिए राजनेताओं पर व्यंग्य करना तलवार की धार पर चलने जैसा बना हुआ है। 'नाक पर मक्खी न बैठने देने' वाले सत्तारूढ़ राजनेता कॉमेडियनों पर शिकंजा कसने को तैयार बैठे होते हैं। इसी कड़ी में हैदराबाद के कॉमेडियन शरत उदय के बेंगलुरु स्थित स्टैंड-अप शो में शनिवार को तेलुगु देशम पार्टी यानी टीडीपी के समर्थकों के एक समूह ने मंच पर आकर जो उत्पात मचाया, निस्संदेह वह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। टीडीपी के समर्थकों ने मंच पर आकर उन्हें तेलुगु देशम पार्टी के नारे लगाने को बाध्य किया। इस हुड़दंग से यह कार्यक्रम बाधित हो गया। इसके चलते न केवल उदय को अपना कार्यक्रम रोकना पड़ा, बल्कि एक बार फिर माफी मांगनी पड़ी। दरअसल, दो साल पहले उदय के व्यंग्यात्मक चुटकुलों के जरिये आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू और उनके बेटे राज्य मंत्री नारा लोकेश को लक्षित किया गया था। निस्संदेह,यह अभिव्यक्ति व रचनात्मकता पर अंकुश लगाने का कुत्सित प्रयास ही कहा जाएगा। सही मायनों में यह घटनाक्रम हास्य-व्यंग्यपूर्ण असहमति के प्रति बढ़ती असहनशीलता का एक और उदाहरण है। गाहे-बगाहे विभिन्न राज्यों में अलग-अलग राजनीतिक दलों द्वारा ऐसी अलोकतांत्रिक प्रतिक्रियाएं सामने आती ही रहती हैं। जबकि हकीकत यह है कि हास्य का संसार बड़े लोगों की सहिष्णुता व उदारता से ही फलता -फूलता है। खासकर उस भारतीय समाज में जहां अकसर कबीरदास की यह उक्ति दोहरायी जाती है - 'निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय। बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।' उनका कहना था कि आलोचक हमारी कमियां बताकर हमारे स्वभाव को शुद्ध और निर्मल बना देते हैं। सही मायनों में व्यंग्य व हास्य इंसान की सहज अभिव्यक्ति के तौर पर लिया जाना चाहिए। निश्चित रूप से यदि हमारे राजनेता व बड़े लोग व्यंग्य या आलोचना को सहजता से लेते हैं तो इससे समाज में हास्य-विनोद भरपूर फलता-फूलता है। विशेष रूप से राजनीतिक व्यंग्य भारत में लंबे समय तक सत्ता को आईना दिखाता रहा है। पंडित नेहरु जैसे नेता कार्टूनिस्टों की तल्ख अभिव्यक्ति को सहजता से लेते थे और व्यंग्यकारों का सम्मान करते थे। धीर-गंभीर राजनेता आलोचना को जनता की नसीहत मानते रहे हैं। कालांतर राजनेताओं की इस सोच में पराभव देखा गया है। विडंबना ही है कि वर्ष 2024 में नायडू व लोकेश पर किए गए व्यंग्य के लिये उदय को फिर से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने को मजबूर किया गया।

यात्रा में त्रिवेणी का स्पर्श आस्था, अवसर और आधुनिकता का संगम

विनोद कुमार सिंह 'तकियावाला'

यूपी,एमपी और महाराष्ट्र के बीच किफायती रेल सेवा का विस्तार -आमजन की यात्रा में नया अध्याय जब भारत की आत्मा की बात होती है, तो वह केवल भूगोल की रेखाओं में नहीं,बल्कि उन यात्राओं में बसती है जो मन, मस्तिष्क और जीवन को जोड़ती हैं।28 अप्रैल 2026 का दिन इसी दृष्टि से एक नई शुरुआत का प्रतीक बनकर सामने आ रहा है,जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वाराणसी-पुणे (हडपसर) और अयोध्या-मुंबई (लोकमान्य तिलक टर्मिनस) अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनों को हरी झंडी दिखाएंगे। यह केवल दो नई रेल सेवाओं का शुभारंभ नहीं,बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक चेतना और आर्थिक गतिशीलता के त्रिवेणी संगम का साकार रूप है।

भारतीय रेल का यह कदम उस 'चलते-फिरते भारत' की कहानी कहता है, जिसमें हर यात्री केवल एक गंतव्य की ओर नहीं बढ़ता, बल्कि वह अपने साथ अपनी आस्था,अपनी आकांक्षाएं और अपनी जड़ों का रिश्ता भी लेकर चलता है।अमृत भारत एक्सप्रेस, अपने नाम के अनुरूप,उसी 'अमृत' को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास है, जिसमें सुविधा, सुरक्षा और सस्ती यात्रा का संतुलित समावेश है।

जब यह ट्रेन वाराणसी की पवित्र धरती से प्रस्थान करेगी, तो वह केवल एक स्टेशन से नहीं, बल्कि उस सनातन चेतना से निकलती प्रतीत होगी, जो काशी विश्वनाथ मंदिर की घंटियों, गंगा घाटी की आरती और गंगा की अविरल धारा में अनवरत बहती है। काशी, जहाँ हर कदम पर इतिहास सांस लेता है और हर घाट पर जीवन का दार्शनिक अर्थ खुलता है, अब सीधे जुड़ रहा है पूणे से–एक ऐसा शहर जो आधुनिक भारत की शिक्षा, तकनीक और औद्योगिक ऊर्जा का प्रतीक है।

यह जुड़ाव केवल दूरी कम करने का साधन नहीं, बल्कि दो युगों के मिलन का प्रतीक है–एक ओर आध्यात्म की अनंत गहराई, दूसरी ओर आधुनिकता की ऊँची उड़ान। काशी से निकलकर जब यह रेल प्रयागराज, झाँसी,भोपाल,इटारसी और भुसावल जैसे शहरों से गुजरती हुई पुणे के हडपसर तक पहुंचेगी, तो वह अपने साथ उन लाखों सपनों को भी लेकर चलेगी, जो रोज़गार, शिक्षा और बेहतर जीवन की तलाश में सीमाओं को पार करते हैं।

इसी प्रकार अयोध्या से प्रारंभ होने वाली अमृत भारत एक्सप्रेस एक अलग ही भावभूमि को स्पर्श करती है।अयोध्या,जहाँ श्री राम मंन्दिर की दिव्यता आज नए भारत के आत्मविश्वास का प्रतीक बन चुकी है, वहाँ से चलकर यह ट्रेन मुम्बई तक पहुँचती है–एक ऐसा महानगर जो सपनों को आकार देता है, परिश्रम को पहचान देता है और जीवन को गति देता है।

यह यात्रा केवल 28 घंटे का समय नहीं, बल्कि उन असंख्य भावनाओं का सेतु है,जो एक प्रवासी के मन में घर और कर्मभूमि के बीच झूलती रहती हैं। सुल्तानपुर,प्रतापगढ़, प्रयागराज, जबलपुर, इटारसी, नासिक और ठाणे जैसे पड़ाव इस यात्रा को केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का जीवंत मानचित्र बना देते हैं।अमृत भारत एक्सप्रेस की विशेषता यह है कि यह 'सामान्य जन' के लिए असाधारण सुविधा लेकर आई है।पूरी तरह नॉन-एसी होने के बावजूद इसमें आधुनिक तकनीक का समावेश है -सीसीटीवी निगरानी, इमरजेंसी टॉक-बैक सिस्टम,अग्निशमन प्रणाली, और बेहतर कोच डिजाइन इसे सुरक्षित बनाते हैं।वहीं आरामदायक सीटें, मोबाइल चार्जिंग सुविधा,स्वच्छ शौचालय और दिव्यांगजन-अनुकूल व्यवस्था इसे मानवीय संवेदनाओं से जोड़ती है।यह ट्रेन बताती है कि विकास केवल तेज गति का नाम नहीं,बल्कि हर वर्ग को साथ लेकर चलने का संकल्प भी है।

यह भी एक दिलचस्प यथार्थ है कि जहां वंदे भारत एक्स्प्रेस ने भारत की रेल यात्रा को गति और आधुनिकता का नया आयाम दिया है, वहीं अमृत भारत एक्सप्रेस उस आधार को मजबूत कर रही है, जिस पर देश का आम नागरिक खड़ा है।यह एक ऐसी पहल है,जो 'समावेशी विकास' की परिभाषा को धरातल पर उतारती है।इन ट्रेनों का मार्ग केवल शहरों को नहीं जोड़ता, बल्कि उन संस्कृतियों को जोड़ता है,जो भारत की विविधता को एकता में बदलती हैं।

वॉशिंगटन हिल्टन: इतिहास की पुनरावृत्ति या अमेरिकी लोकतंत्र की कमजोरी?

वॉशिंगटन के प्रतिष्ठित वॉशिंगटन हिल्टन में शनिवार रात हुई गोलीबारी ने पूरी दुनिया को एक बार फिर चौंका दिया। यह केवल एक सुरक्षा संबंधी घटना नहीं थी, बल्कि एक ऐसा क्षण था जिसने इतिहास, राजनीति और लोकतंत्र—तीनों को एक साथ खड़ा कर दिया। जब व्हाइट हाउस संवाददाता रात्रिभोज के दौरान अचानक गोलियों की आवाज गूंजी, तो वहां मौजूद हजारों लोगों के लिए यह किसी भयावह स्वप्न से कम नहीं था। इस कार्यक्रम में डोनाल्ड ट्रंप, मेलानिया ट्रंप और जेडी वेंस जैसे शीर्ष नेता उपस्थित थे। कुछ ही पलों में उत्सव का माहौल भय और अराजकता में बदल गया। अमेरिकी सीक्रेट सर्विस की तत्परता ने स्थिति को नियंत्रित कर लिया, लेकिन इस घटना ने कई गहरे सवाल खड़े कर दिए, जिनका उत्तर सरल नहीं है। इस घटना की सबसे चौंकाने वाली और साथ ही डरावनी बात यह है कि यह पहली बार नहीं हुआ। यही होटल, जिसे कभी-कभी 'हिंकली हिल्टन' के नाम से भी जाना जाता है, पहले भी अमेरिकी इतिहास की एक बड़ी हिंसक घटना का गवाह रह चुका है। वर्ष 1981 में इसी स्थान के बाहर तत्कालीन राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन पर जॉन हिंकली जूनियर ने गोली चलाई थी। उस हमले में रीगन गंभीर रूप से घायल हो गए थे और उनके प्रेस सचिव जेम्स ब्रैडी को स्थायी रूप से विकलांगता का सामना करना पड़ा था। उस समय भी यही सवाल उठे थे—सुरक्षा में चूक कैसे हुई? और आज, लगभग 45 वर्ष बाद, वही प्रश्न फिर हमारे सामने खड़ा है। फर्क सिर्फ इतना है कि अब दुनिया कहीं अधिक जटिल हो चुकी है और खतरों के स्वरूप भी बदल चुके हैं।

डॉ. प्रियंका सौरभ

घटना के दौरान मौजूद लोगों के अनुसार सब कुछ सामान्य ढंग से चल रहा था। हंसी-मजाक, भाषण, मीडिया और राजनीति का मिश्रण—यह रात्रिभोज हमेशा से अमेरिकी लोकतंत्र की एक अनूठी परंपरा रहा है। लेकिन अचानक हुई गोलीबारी ने इस परंपरा को झकझोर कर रख दिया। लोग अपनी सुरक्षा के लिए टेबलों के नीचे छिपने लगे, अफरा-तफरी मच गई और कुछ ही क्षणों में पूरा वातावरण नियंत्रण से बाहर होता प्रतीत हुआ। हालांकि राहत की बात यह रही कि इस घटना में कोई बड़ा जान-माल का नुकसान नहीं हुआ, लेकिन मानसिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

यह घटना केवल एक सुरक्षा चूक नहीं है, बल्कि यह अमेरिकी समाज में बढ़ते राजनीतिक तनाव का भी संकेत देती है। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका में वैचारिक ध्रुवीकरण तेजी से बढ़ा है। 6 जनवरी कैपिटल दंगा जैसी घटनाएं यह दिखा चुकी हैं कि राजनीतिक मतभेद अब केवल बहस और विचार-विमर्श तक सीमित नहीं रह गए हैं। वे सड़कों पर, संस्थानों में और अब उच्च-स्तरीय आयोजनों में भी खुलकर सामने आ रहे हैं। इस संदर्भ में वॉशिंगटन हिल्टन की यह घटना एक अलग-थलग घटना नहीं लगती, बल्कि एक व्यापक प्रवृत्ति का हिस्सा प्रतीत होती है।

डोनाल्ड ट्रंप की राजनीति भी इस पूरे परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनकी 'अमेरिका फर्स्ट' और 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' जैसी नीतियों ने जहां एक बड़े वर्ग को आकर्षित किया, वहीं दूसरी ओर समाज के एक हिस्से में असंतोष और विरोध भी पैदा किया। मीडिया के साथ उनका टकराव, 'फेक न्यूज़' जैसे शब्दों का प्रयोग, और राजनीतिक विरोधियों के प्रति तीखी भाषा–इन सबने सामाजिक माहौल को और अधिक संवेदनशील बना दिया। ऐसे में जब कोई हिंसक घटना घटित होती है, तो वह केवल एक व्यक्ति का कृत्य नहीं प्रतीत होती, बल्कि उस व्यापक सामाजिक और राजनीतिक वातावरण का परिणाम लगती है जिसमें असहमति को अक्सर शत्रुता के रूप में देखा जाने लगा है। सुरक्षा व्यवस्था पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। अमेरिकी सीक्रेट सर्विस को विश्व की सबसे सक्षम सुरक्षा एजेंसियों में गिना जाता है। 1981 की घटना के बाद इसमें कई महत्वपूर्ण सुधार किए गए–अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग, अधिक प्रशिक्षित सुरक्षा कर्मी, और उन्नत निगरानी प्रणाली। फिर भी इस प्रकार की घटना का होना यह दर्शाता है कि भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक आयोजनों में जोखिम को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। आज के समय में खतरे केवल पारंपरिक हथियारों से नहीं आते, बल्कि वे मानसिक अस्थिरता, ऑनलाइन कट्टरता और व्यक्तिगत निराशा जैसे कारकों से भी जुड़े होते हैं। इस घटना का एक और महत्वपूर्ण पहलू है–डिजिटल युग और सोशल मीडिया की भूमिका। आज विचारों का प्रसार अत्यंत तेज गति से होता है। गलत जानकारी, षड्यंत्र सिद्धांत और कट्टरपंथी विचारधाराएं कुछ ही समय में लाखों लोगों तक पहुंच जाती हैं। जहां 1981 में जॉन हिंकली जूनियर पर फिल्मों के प्रभाव की चर्चा हुई थी, वहीं आज के समय में हमलावरों पर डिजिटल दुनिया और सोशल मीडिया का प्रभाव अधिक देखा जाता है। यह बदलाव सुरक्षा एजेंसियों के सामने नई चुनौतियां प्रस्तुत करता है, क्योंकि अब खतरे की पहचान करना और उसे समय रहते रोकना पहले से कहीं अधिक कठिन हो गया है। वैश्विक स्तर पर भी इस घटना के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अमेरिका को दुनिया का सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र माना जाता है, और वहां होने वाली घटनाएं अन्य देशों के लिए संकेत का काम करती हैं। भारत जैसे देशों के लिए, जहां बड़े पैमाने पर राजनीतिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं, यह एक चेतावनी है। केवल तकनीकी रूप से सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना पर्याप्त नहीं है; इसके साथ-साथ सामाजिक सौहार्द, संवाद और आपसी विश्वास को भी बढ़ावा देना आवश्यक है।

इस घटना ने एक गहरा प्रश्न भी उठाया है–क्या लोकतंत्र वास्तव में सुरक्षित है? लोकतंत्र केवल चुनावों और संस्थाओं का नाम नहीं है, बल्कि यह एक विचारधारा है जिसमें असहमति को स्वीकार किया जाता है और संवाद को प्राथमिकता दी जाती है। जब समाज में संवाद की जगह टकराव ले लेता है, तो लोकतंत्र की नींव कमजोर होने लगती है। वॉशिंगटन हिल्टन की यह घटना इसी संभावित कमजोरी की ओर संकेत करती है।

इसके सामाजिक निहितार्थ भी अत्यंत गहरे हैं। मीडिया, जो इस कार्यक्रम का मुख्य केंद्र होता है, स्वयं इस घटना का हिस्सा बन गया। पत्रकार, जो सत्ता से प्रश्न पूछने और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए वहां उपस्थित थे, अचानक स्वयं एक संकट का सामना करने लगे। यह स्थिति हमें यह सोचने पर विवश करती है कि क्या प्रेस की स्वतंत्रता और उसकी भूमिका को लेकर समाज में बढ़ती असहिष्णुता भी इस प्रकार की घटनाओं को जन्म दे रही है।

अंततः, यह घटना केवल अमेरिका के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक चेतावनी है। इतिहास स्वयं को दोहराता है, लेकिन हर बार वह एक नया संदेश भी देता है। 1981 की घटना के बाद सुरक्षा व्यवस्था में सुधार हुए थे; 2026 की इस घटना के बाद संभवतः और व्यापक बदलावों की आवश्यकता होगी। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन तकनीक या सुरक्षा में नहीं, बल्कि हमारी सोच में होना चाहिए। जब तक समाज में सहिष्णुता, संवाद और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा नहीं मिलेगा, तब तक ऐसी घटनाओं को पूरी तरह रोक पाना कठिन रहेगा।

वॉशिंगटन हिल्टन की यह रात केवल एक घटना नहीं, बल्कि एक दर्पण है–जिसमें हम लोकतंत्र की शक्ति और उसकी कमजोरियों दोनों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। यह हमें यह याद दिलाती है कि लोकतंत्र की रक्षा केवल कानून और सुरक्षा एजेंसियों के भरोसे नहीं की जा सकती, बल्कि यह नागरिकों की सोच, उनके व्यवहार और उनके मूल्यों पर भी निर्भर करती है। यदि हम इस संदेश को समझ लें, तो शायद भविष्य में इतिहास को स्वयं को दोहराने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः।काकः सर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें

जब हम किसी और पर आरोप लगाते हैं,तो हमको अपनी गलतियों पर आत्म-चिंतन, जवाबदेही परभी विचार करना चाहिए। हम एक उंगली दूसरे पर उठाते हैं तो तीन उंगलियां हमारे ऊपर उठती है इस को रेखांकित करना ज़रूरी हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है सृष्टि में खूबसूरत मानवीय जीव की रचना कर रचनाकर्ता नें उसमें गुण और अवगुण रूपी दो गुलदस्ते भी जोड़े हैं और उनका चयन करने के लिए 84 लाख़ योनियों में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि का सृजन मानवीय योनि में कर अपने भले बुरे सोचनें का हक उसी को दिया है,परंतु हम अपनीं जीवन यात्रा में देखते हैं कि मानवीय जीव अवगुण रूपी गुलदस्ते का चुनाव खुद कर उसमें ढल जाता है

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं

और अंत में दोष सृष्टि रचनाकर्ता को ही देता है कि मेरे जीवन को नरक बना दिया जबकि गलती मानवीय जीव की ही है कि उसने ही अपनी बुद्धि से उस अवगुण रूपी गुलदस्ते को चुना।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि कहावत जब हम एक उंगली उठाते हैं, तो तीन उंगलियां हमारी ओर इशारा करती हैं अक्सर आत्म-चिंतन और जवाबदेही के विचार से जुड़ी होती है। यह वाक्यांश बताता है कि जब हम किसी और पर आरोप लगाते हैं या दोष देते हैं,तो हमको उस स्थिति में अपनी गलतियों या योगदानों पर भी विचार करना चाहिए।हालांकि इस कहावत की सटीक उत्पत्ति स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह विभिन्न सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं में पाए जाने वाले विषयों को समाहित करती है।यह प्रक्षेपण के बारे में मनोविज्ञान की अवधारणाओं के साथ संरेखित है, जहां व्यक्ति अपने अवांछनीय गुणों या व्यवहारों को दूसरों पर आरोपित करते हैं। उंगलियों की छवि यह दर्शाती है कि आलोचना अक्सर आलोचना के विषय की तुलना में आलोचक के बारे में अधिक दर्शाती है।इस वाक्यांश की खूबसूरती यह है कि यह किसी और को दोष देने के बजाय आत्मनिरीक्षण करने पर मजबूर करता है।यूं तो अवगुणों को सैकड़ों शब्दों, बुराइयों से पुकारा जाता है जिसमें आज हम निंदा बुराई, दूसरों पर उंगली उठाना इस अवगुण की चर्चा कर करेंगे आओ निंदा रूपी अवगुण त्यागने का संकल्प लें।हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है।

साथियों बात अगर हम निंदा की करें तो किसी ने खूब ही कहा है कि, संसार में प्रत्येक जीव की रचना ईश्वर अल्लाह ने किसी उद्देश्य से की है। हमें ईश्वर अल्लाह की किसी भी रचना का मखौल उड़ाने का अधिकार नहीं है।इसलिए किसी की निंदा करना साक्षात परमात्मा की निंदा करने के समान है।किसी की आलोचना से आप खुद के अहंकार को कुछ समय के लिए तो संतुष्ट कर सकते हैं किन्तु किसी की काबिलियत, नेकी, अच्छाई और सच्चाई की संपदा को नष्ट नहीं कर सकते। जो सूर्य की तरह प्रखर है, उस पर निंदा के कितने ही काले बादल छा जाएं किन्तु उसकी प्रखरता, तेजस्विता और ऊष्णता में कमी नहीं आ सकती।

साथियों बात अगर हम खुद का आंकलन दूसरों से सर्वश्रेष्ठ करने की करें तो, अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा असत्य के समान है। जैसे हमारी आंखें चंद्रमा के कलंक तो देख लेती हैं , किंतु अपने काजल को नहीं देख पातीं। उसी प्रकार हम दूसरों के दोषों को देखते हैं , हालांकि खुद अनेक दोषों से भरे हैं। दूसरों में जो दोष दिखाई देते हैं , सचमुच उनका कारण हमारे अपने चित्त की दूषित वृत्तियां ही है। दूसरों की निंदा किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होती। इस संबंध में एक कवि ने लिखा भी है कि हमें परखने का तरीका नहीं है। कोई वरना दुश्मन किसी का नहीं है। निंदक को यह याद रखना चाहिए कि दुनिया तुझे हजारों आंखों से देखेगी , जबकि तू दुनिया को दो ही आंखों से देख सकेगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों पर एक उंगली उठाने की करें तो, जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है , तो उसे याद रखना चाहिए कि पीछे की और मुड़ी उसकी तीन उंगलियां पहले उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं। निंदा- चुगली व्यर्थ ही है। इससे परस्पर वैमनस्य , कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं। इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो , केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो। यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं। बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं ,मातु भाषी की निंदा करते हैं , संसार में ऐसा कोई नहीं है , जिसकी निंदा न होती हो, इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है , तैसी कहै बनाय। ताको बुरा न मानिए , लेन कहां यूं जाए। केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझें , वह अपने आप को स्वयं ही जाने , क्योंकि लोक तो निरंकुश है , जो चाहता है सो कह देता है। द्वेषी गुणं न पश्यति , दोषी गुणों को नहीं देखता।

साथियों बात अगर हम पर निंदा में आनंद की करेंतो परनिंदा में प्रारंभ में काफी आनंद मिलता है लेकिन बाद में निंदा करने से मन में अशांति व्याप्त होती है और हम हमारा जीवन दुःखों से भर लेते हैं। प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग दृष्टिकोण एवं स्वभाव होता है। दूसरों के विषय में कोई अपनी कुछ भी धारणा बना सकता है। हर मनुष्य का अपनी जीभ पर अधिकार है और निंदा करने से किसी को रोकना संभव नहीं है। न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।। अर्थ-लोगों की निंदा (बुराई) किये बिना दुष्ट (बुरे) व्यक्तियों को आनंद नहीं आता। जैसे कौवा सब रसों का भोग करता है परंतु गंदगी के बिना उसकी संतुष्टि नहीं होती, लोग अलग-अलग कारणों से निंदा रस का पान करते हैं। कुछ सिर्फ अपना समय काटने के लिए किसी की निंदा में लगे रहते हैं तो कुछ खुद को किसी से बेहतर साबित करने के लिए निंदा को अपना नित्य का नियम बना लेते हैं। निंदकों को संतुष्ट करना संभव नहीं है।

साथियों बात अगर हम निंदा पर वैश्विक विचारों की करें तो, महात्मा गांधी ने भी कहा है कि दूसरों के दोष देखने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें। दूसरों की निंदा अश्रेयस्कारी है। निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है। जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विषय है। इसीलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है सपनेहां नहिं देखा परदोषा !अर्थात् स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। भगवान बुद्ध ने कहा है , जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है , वह अपने अवगुण प्रकट करता है। भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खाने के बराबर है। विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है। ईसा मसीह ने कहा था ,लोग दूसरों की आंखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते। हेनरी फोर्ड ने कहा कि मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूं। हमारी सद्भावना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है।सद्भावना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है। लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों के दोष ढूंढना, निंदा करना मानवीय स्वभाव की करें तो, दूसरों की निंदा करना। सदैव दूसरों में दोष ढूंढते रहना मानवीय स्वभाव का एक बड़ा अवगुण है। दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है। इस तरह के लोग हमें कहीं भी आसानी से मिल जाएंगे। प्रतिवाद में व्यर्थ समय गंवाने से बेहतर है अपने मनोबल को और भी अधिक बढ़ाकर जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें। ऐसा करने से एक दिन आपकी स्थिति काफी मजबूत हो जाएगी और आपके निंदकों को सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसलिए सब तरफ गुण ही ढूंढने की आदत डालो। देखो कितना आनंद आता है। दुनिया में पूर्ण कौन है हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियां रहती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः। काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें हम एक उंगली दूसरों पर उठाते हैं तो तीन उंगलियां हमारे तरफ उठती है इसको रेखांकित करना ज़रूरी है हम खुद का आंकलन दूसरे से सर्वश्रेष्ठ करने की चूक से बचें, स्वयं का छोटा कहलानें वाले व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ गुणवान होतें है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad-380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from 8/13, Sneh Plaza Shopping Center, L.D.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424. Editor: JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd. Office: B/13, Sneh Plaza Shopping Center, IO.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424 Gujarat, India. Phone: (0) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Emal navsarjansanskru2016@gmail.com"navsarjansanskruti2016@yahoo.com Website: www.navsarjansanskruti.com

पहाड़गंज आग्निकांडः चूना मंडी में मकान की तीसरी मंजिल पर लगी आग, दिव्यांग बुजुर्ग की मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। मध्य दिल्ली के पहाड़गंज इलाके के चूना मंडी में देर रात एक मकान में भीषण आग लग गई। आग मकान की तीसरी मंजिल पर घरेलू सामान में लगी थी। हादसे में 60 वर्षीय दिव्यांग बुजुर्ग रमेश गंभीर रूप से झुलस गए। उन्हें पीसीआर की मदद से आरएमएल अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वहीं उनके भाई नरेश के हाथ में मामूली जलने की चोट आई है। सूचना मिलते ही दमकल की दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया गया। पुलिस और फायर विभाग मामले की जांच में जुटे हैं।

दिल्ली के कल्याणपुरी में मकान में लगी भीषण आग, दमकल की देरी से बढ़ी परेशानी

पूर्वी दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के कल्याणपुरी में सोमवार रात दो मंजिला मकान में आग लग गई। आरोप है आग की सूचना देने के बाद भी दमकल करीब 30 मिनट की देरी से पहुंची। जब दमकल पहुंची तब तक आग ने पूरे मकान को अपने आगोश में ले लिया था। दमकल की पांच गाड़ियों ने दो घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। शार्ट सर्किट को आग की वजह बताया जा रहा है। पुलिस ने बताया कि कल्याणपुरी 13 ब्लॉक में एक इलेक्ट्रॉनिक आइटम की दुकान में आग लगने की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। दुकान के ऊपर दो मंजिला मकान बना हुआ था। हादसे के वक्त दुकान व मकान में कोई था नहीं। वही स्थानीय लोगों ने बताया कि आग की शुरुआत दुकान से हुई। आग तेजी के साथ फैली। ऊपरी मंज़िलों को भी आगोश में ले लिया।

झाड़ग्राम चिड़ियाघर में जानवरों को गर्मी से राहत देने के लिए विशेष इंतजाम

झाड़ग्राम, एजेंसी। भीषण गर्मी और 40 डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंचते तापमान ने आम लोगों के साथ-साथ वन्यजीवों की परेशानी भी बढ़ा दी है। ऐसे में झाड़ग्राम जूलॉजिकल पार्क के पशु-पक्षियों को गर्मी से बचाने के लिए पार्क प्रशासन ने विशेष इंतजाम किए हैं। पार्क सूत्रों के अनुसार जानवरों के शरीर को ठंडा रखने के लिए उन्हें नियमित रूप से गुड़-पानी दिया जा रहा है। साथ ही उनके भोजन में पानी से भरपूर फल जैसे खीरा और तरबूज भी शामिल किए गए हैं। एनक्लोजर के ऊपर घास-फूस की छत बनाई गई है ताकि सीधे धूप का असर कम हो सके। मांसाहारी जानवरों जैसे चीता और भालू को ठंडे पानी से नियमित रूप से नहलाया जा रहा है। इसके अलावा पार्क के विभिन्न हिस्सों में स्प्रिंकलर लगाकर पानी का छिड़काव किया जा रहा है, जिससे वातावरण को कुछ हद तक ठंडा रखा जा सके। झाड़ग्राम के वन अधिकारी उमर इमाम ने बताया कि भीषण गर्मी के बीच पशु-पक्षियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लगातार निगरानी रखी जा रही है और आवश्यकता के अनुसार कदम उठाए जा रहे हैं। एनक्लोज़र के भीतर की स्थिति पर भी नियमित रूप से नजर रखी जा रही है। उल्लेखनीय है कि झाड़ग्राम जूलॉजिकल पार्क जंगलमहल क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र है, जहां सर्दियों में बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। हालांकि गर्मियों में पथरीली जमीन और अधिक तापमान के कारण परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण हो जाती हैं। वर्तमान में पार्क में 16 प्रजातियों के 187 स्तनधारी, 12 प्रजातियों के 153 सरीसृप और 18 प्रजातियों के 74 पक्षी मौजूद हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अत्यधिक गर्मी के दौरान जानवरों के व्यवहार में भी बदलाव देखा जाता है। इसलिए समय पर उचित देखभाल और वातावरण का संतुलन बनाए रखना बेहद आवश्यक होता है।

दिल्ली में नाला सफाई की सुस्त रफ्तारः दावों और जमीनी हकीकत के बीच फंसा मानसून का इंतजाम

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में मानसून में जलभराव न हो इसके जरुरी है कि समयबद्ध तरीके से नालों की सफाई का कार्य हो। इसके लिए इस वर्ष दिल्ली सरकार और नगर निगम ने समयपूर्व ही तैयारी शुरू की थी। साथ ही निर्देश दिए थे कि मानसून के आगमन से पहले नालों की सफाई पूरी हो भी जाए। सरकार के इस आदेश कुछ विभाग पालन कर रहे हैं तो कुछ ठेंगा दिखा रहे हैं। क्योंकि दिल्ली में नालों की सफाई की जिम्मेदारी एमसीडी से लेकर लोक निर्माण विभाग, बाढ़ एवं नियंत्रण विभाग, डूसिब जैसी एजेंसियों की है लेकिन इसमें कुछ एजेंसिया दुरुस्त तरीके से काम कर रही है तो कुछ अभी भी ठेंगा दिखा रही है। यही वजह है कि कुछ विभागों की नालों की सफाई को लेकर स्थिति ठीक दिख रही है तो कुछ जगह पर लापरवाही भी उजागर हो रही है। अभी बात करें तो एमसीडी के चार फिट से अधिक गहरे नालों की सफाई 13.80 प्रतिशत ही हुई है जबकि चार फिट से कम गहरे 12116 नालों की सफाई 57 प्रतिशत हो गई है।

कार्य की स्थिति बताने को तैयार नहीं : वहीं, बाढ़ एवं नियंत्रण विभाग ने भी 76 अपने बड़े नालों की सफाई का कार्य 57 प्रतिशत कर लिया है। हालांकि पीडब्ल्यूडी समेत शेष दूसरी एजेंसियों के कार्य की स्थिति बताने को तैयार नहीं हैं लेकिन बड़े नालों की सफाई में विभाग द्वारा ढुलमुल रवेया अपनाया जा रहा है। बाढ़ एवं नियंत्रण विभाग के अनुसार प्रमुख 76 नालों से कुल 28.57 लाख घन मीटर गाद हटाने का लक्ष्य रखा गया था। 17 अप्रैल तक इसमें से 16.48 लाख घन मीटर से अधिक गाद हटाया जा चुका है। नजफगढ़ ड्रेन से भी गाद निकालने का लगभग 48 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है। नालों की सफाई सही तरह से समय पर हो सके इसके लिए आधुनिक मशीनों का प्रयोग किया जा रहा है। 94 करोड़ की लागत से 38 आधुनिक मशीनें खरीदने का निर्णय लिया गया है। इनमें से 12 मशीनें खरीदी जा चुकी हैं। अन्य की खरीद प्रक्रिया चल रही है।

पड़ताल में खुली पोल, कहीं सफाई नहीं तो कहीं गाद नहीं उठाई : मानसून में नालों की सफाई की स्थिति को लेकर दैनिक की टीम ने दिल्ली के विभिन्न विभागों की नालों की सफाई के कार्यों की पड़ताल की। जहां पर कुछ जगह पर काम होता हुआ दिखाई दिया तो कई जगह पर कूड़े से पटे हुए नाले दिखाई दिए। वहीं, गाद सूख जाने के बाद भी लगे ढेर की सुध न लेने वाले अधिकारियों की भी पोल खुल गई। नालों की सफाई को लेकर साफ दिशा निर्देश हैं कि जो गाद निकाली जाए उसे सूखने के बाद तुरंत साफ कर दिया जाए। ताकि जब वर्षा हो तो वह फिर से नाले में न जाए और सूखकर यह धूल उड़ने का कारण न बने। लेकिन एजेंसियों की लापरवाही इस कद है जहां सफाई हुई है वहां पर कई जगह पर गाद सूखने के बाद भी सड़क पर साफ पड़ी हुई नजर आ रही है। जमीनी हकीकत की बात करें मध्य दिल्ली में आइटीओ कब्रिस्तान रोड के पास सड़क पर गाद निकली पड़ी है लेकिन कोई उठाने वाला नहीं है। इसी प्रकार पूर्वी दिल्ली में कांति नगर में बाढ़ एवं सिंचाई नियंत्रण का नाला है। नाले की सफाई तो यहां दिख रही है लेकिन नाले के किनारे गाद और कूड़े का ढेर दिख रहा है। जिसकी वजह से वर्षा होने में यह गाद फिर नालों में चली जाएगी।

नाले पर कूड़े की मोटी परत : इसी प्रकार की स्थिति इसी विभाग के तैमुर नगर नाले की दिखाई दी। जहां नाला तो साफ था लेकिन गाद किनारे पड़े थी। पूर्वी दिल्ली में ब्रह्मपुरी में एमसीडी के नाले पर कूड़े की मोटी परत दिखाई दी। मास्टर प्लान रोड पर शास्त्री नगर के पास नाले में गंदगी दिखाई दी।

नालों की सफाई की स्थिति

: सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के तहत नालों की सफाई की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। कई प्रमुख नालों में गाद निकालने का काम अभी आधा भी पूरा नहीं हो पाया है।

विभागवार स्थिति (टन में)

नजफगढ़ ड्रेन: लक्ष्य 12,91,298 7 निकाला गया 6,22,890 7 48.24%
सप्लीमेंट्री ड्रेन: लक्ष्य 1,02,282 7 निकाला गया 56,050 7 54.80%
बारापुला नालाः लक्ष्य 40,000 7 निकाला गया 34,000 7 85%
मुंधेला नाला: लक्ष्य 54,724 7 निकाला गया 31,137 7 56.90%
ड्रेन नंबर छह: लक्ष्य 48,000 7 निकाला गया 34,560 7 72%
कुल स्थितिः लक्ष्य 15,36,304 टन में से 7,78,637 टन गाद निकाली गई, जो 50.68 प्रतिशत है।

एमसीडी नालों की स्थिति ।

चार फीट से कम गहरे नाले: 12116 7 57.29% कार्य
चार से अधिक गहरे नाले: 793 7 मात्र 13.80% कार्य
नंबर गेम : 30 मई तक नालों की सफाई का लक्ष्य जनवरी 2026 में समय से पहले काम शुरू करने के निर्देश दिए गए थे केवल 13% एमसीडी नालों की सफाई होने से लक्ष्य पूरा होना मुश्किल ।

सात राज्यसभा सदस्यों की सदस्यता रद नहीं हुई तो आप करेगी अदालत का रुख संजय सिंह ने बताया पार्टी का प्लान

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता व राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने सोमवार को कहा कि अगर पार्टी के सात पुराने राज्यसभा सदस्यों की दलबदल कानून के तहत सदस्यता रद नहीं की जाती है तो उनकी पार्टी अदालत का रुख करेगी। सिंह का यह बयान राज्यसभा के चेयरमैन द्वारा आप से गए सात राज्यसभा सदस्यों को भाजपा में शामिल कर लेने की मंजूरी के एक दिन बाद आया है। चेयरमैन के फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए सिंह ने कहा कि मैंने आरोप लगाया है कि आप की आपत्तियों और संविधान की 10वीं अनुसूची के तहत सात राज्यसभा सदस्यों की सदस्यता रद करने की उनकी मांग पर विचार नहीं किया गया। सिंह ने कहा कि चेयरमैन ने उन सात राज्यसभा सदस्यों की दी गई चिट्ठी पर ध्यान दिया है और उसके आधार पर उनके भाजपा में शामिल मान लिया है। उन्होंने कहा कि पार्टी को उम्मीद है कि एक बार उनके पत्र की जांच हो जाने के बाद चेयरमैन सात सदस्यों की सदस्यता रद करके संविधान और डेमोक्रेसी के पक्ष में काम करेंगे। उन्होंने कहा कि अगर ऐसा नहीं होता है, तो हम कोर्ट जाएंगे। इस तरह से पार्टी तोड़ना गलत है। सिंह ने रविवार को राज्यसभा चेयरमैन को चिट्ठी लिखकर सात सदस्यों को अयोग्य ठहराने की मांग की थी।

गुजरात में भाजपा सरकार के 12 वर्षः विकास के नाम पर लाभार्थी वर्ग और एक नई सामाजिक संरचना का उदय हुआ

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात में भाजपा सरकार ने 12 वर्षों से अधिक के अथक प्रयासों के बाद तीन प्रकार के लोगों को जन्म दिया है। जनता के बीच उभरा यह नया और सशक्त वर्ग भाजपा, विशेषकर मोदी का समर्थक बनने के लिए विवश हो गया है। पहला वर्ग लाभ-उन्मुख लाभार्थी वर्ग है। लाभ-उन्मुख वर्ग से तात्पर्य उस वर्ग से है जिसे मोदी सरकार की नीतियों से लाभ हुआ है। प्रधानमंत्री ने कई त्योहारों का आयोजन किया। इन त्योहारों से कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन हुआ। मंडप, कुर्सियाँ, खानपान, लाइट, बाइक, यात्रा, कालीन आदि बनाने वालों को खूब लाभ हुआ। इसी प्रकार, मोदी सरकार ने गुजरात आवास बोर्ड को बंद कर दिया, जिससे मकान बनाने का काम केवल बिल्डरों के पास रह गया और परिणामस्वरूप जमीन और मकानों की कीमतें आसमान छू गईं और बिल्डरों ने करोड़ों रुपये का मुनाफा कमाया। परिणामस्वरूप, जमीन विक्रेताओं को लाभ हुआ। क्योंकि जमीनों को गैर-कृषि (ङ्क) घोषित करने का रास्ता खुल गया। इसलिए कम कीमत वाली जमीनें ऊँची कीमतों पर बेचने वालों को लाभ हुआ और निवेश करने में सक्षम लोगों ने निवेश किया और उन्हें बेचकर लाभ कमाया। यह स्वाभाविक है कि जो लोग इस तरह से लाखों-करोड़ों रुपये कमाते हैं, वे मोदी के भक्त बन जाते हैं।

इसी तरह, शिक्षा क्षेत्र में स्कूलों और कॉलेजों के नाम पर दुकानें खोली गईं, जिसके परिणामस्वरूप निजी ट्रस्टों का गठन हुआ और उन्होंने हजारों-लाखों की फीस वसूल कर भारी मुनाफा कमाया। मोदी सरकार ने बहुत कम सरकारी स्कूल और कॉलेज खोले हैं, और जब वे खुलते भी हैं, तो उनमें न तो शिक्षक होते हैं और न ही व्याख्याता। यही कारण है कि शिक्षा की गुणवत्ता बहुत खराब है। यहां तक कि गरीब माता-पिता भी अपने बच्चों को वहां नहीं भेजते। यही कारण है कि आत्मनिर्भर स्कूलों और कॉलेजों के ट्रस्ट बर्बाद हो गए हैं। ऐसा वर्ग पूरे गुजरात में बहुत बड़ा है। और यह स्वाभाविक है कि जो लोग शिक्षा को एक व्यापारिक वस्तु मानते हैं, वे मोदी और भाजपा का समर्थन करते हैं।

और ऐसा ही एक और बड़ा समूह उद्योगपतियों का है। सरकार ने उन्हें करोड़ों रुपये की जमीनें बेहद कम दामों पर बेच दीं, मानो पानी के दाम पर। क्या यह भी कहा जा सकता है कि मोदी सरकार गुजरात को ऐसे बेच रही है जैसे कोई नीलामी हो रही हो? उद्योगपतियों को चरागाह, बंजर और अनुपजाऊ जमीनें बेहद कम दामों पर मिलीं, जो उन्हें भारत में कहीं और नहीं मिलीं। अगर ऐसे उद्योगपति मोदी की तारीफ न करें तो यह आश्चर्य की बात ही है। और वे तो बस यही चाहते हैं कि मोदी कई वर्षों तक प्रधानमंत्री बने रहें। क्योंकि तभी उन्हें पूरे भारत में इतनी कम कीमतों पर जमीनें मिलेंगी। अब तो ऐसा लगता है कि 'जीवंत गुजरात' सम्मेलन मुख्य रूप से उद्योग को यह आश्वासन देने के लिए आयोजित किए जाते हैं कि सरकार उन्हें बेहद सस्ते दामों पर जमीनें देने को तैयार है। तो क्या इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि उद्योगपति उनके भक्त बन जाते हैं? इसमें गरीब लोगों के कानों में विकास के प्रलोभन और प्रोत्साहन की आवाज गूंजती है और भोले-भाले गरीब लोग विकास के नाम पर अपना पेट भरते हैं।

दिल्ली दंगे में हत्या के मामले में 12 आरोपी बरी, कड़कड़डूमा कोर्ट ने सबूतों को माना कमजोर

पूर्वी दिल्ली, एजेंसी। फरवरी 2022 में दंगे के दौरान हुई एक व्यक्ति की हत्या के मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट ने 12 आरोपितों को बरी कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष आरोप साबित करने में असफल रहा और गवाहों के बयानों में गंभीर विरोधाभास है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रवीण सिंह के कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपियों के खिलाफ संदेह से परे अपराध साबित नहीं कर सका। आरोपितों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया। कोर्ट ने लोकेश सोलंकी, पंकज शर्मा, सुमीत चौधरी, अंकित चौधरी, प्रिंस, रिषभ, जतिन शर्मा, विवेक, हिमांशु ठाकुर, साहिल, टिंकू अरोड़ा व संदीप को बरी कर दिया। अभियोजन पक्ष ने आरोप लगाया था कि इन आरोपितों ने दंगे के दौरान मुशर्रफ नाम के व्यक्ति के घर में घुसकर उसके साथ मारपीट की। उसकी हत्या कर शव को नाले में फेंक दिया। 27 फरवरी 2020 को उसका शव नाले से बरामद हुआ था। कोर्ट ने कहा कि अभियोजन का मामला मुख्य रूप से मृतक की पत्नी और बेटी के बयानों पर आधारित था, लेकिन उनके बयानों में कई गंभीर विरोधाभास पाए गए।

पत्नी का व्यवहार अस्वाभाविक : अदालत ने यह भी कहा कि पत्नी का व्यवहार अस्वाभाविक प्रतीत होता है, क्योंकि उसने कथित घटना देखने के बावजूद करीब दो दिन तक न तो पीसीआर को काल की और न ही किसी रिश्तेदार को सूचना दी। कोर्ट ने काल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) को भी पर्याप्त सबूत नहीं माना और कहा कि इससे केवल इतना पता चलता है कि आरोपी अपने इलाके में मौजूद थे, लेकिन इससे अपराध में उनकी संलिप्तता साबित नहीं होती।

गुजरात में मजदूर दिवस के आयोजन और मजदूरों के अधिकारों की वास्तविक स्थिति को लेकर आलोचना

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात स्थापना दिवस को 1 मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। और गुजरात स्थापना दिवस के बाद से, नेता बड़ी-बड़ी घोषणाएं करके, बड़ी-बड़ी सभाएं आयोजित करके और अपने पांच कार्यकर्ताओं को इकट्ठा करके अपने अहंकार को संतुष्ट करते हैं।

श्रमिकों के हितों के विरुद्ध काम अधिक हो रहा है, उनके हित में नहीं। श्रमिकों के विरुद्ध कानून बनाकर उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। श्रमिकों का आर्थिक शोषण एक मूलभूत समस्या है। श्रमिकों के लिए आवास और स्वच्छ आवास जैसे बुनियादी मुद्दों पर कोई आवाज़ उठाने को तैयार नहीं है। सरकार आवाज़ उठाने वालों की अनसुनी कर देती है। श्रमिकों के हितों के लिए काम करने वाले अधिकारी अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में विफल रहे हैं। श्रमिकों के हित में वे मामलों को श्रम न्यायालयों में भेजकर संतुष्ट होते जा रहे हैं। लेकिन न्यायालयों में न्याय मिलने की कोई गारंटी नहीं है। श्रमिकों को वेतन न मिलने, अवैध रूप से बर्खास्तगी, अवैध श्रम प्रथाओं जैसे मामलों में न्याय की कोई उम्मीद नहीं है। यदि मामला छह महीने या एक वर्ष में निपटा दिया जाता है, तो श्रमिक को राहत मिल जाती है। लेकिन किसी न किसी कारण से मामला श्रम न्यायालयों में वर्षों तक चलता रहता है। फिर जब 10 साल बाद मामला निपटाया जाता है, तो श्रमिक आर्थिक बर्बादी के कारण बेरोजगार और मानसिक रूप से टूट जाता है। वर्षों से इस प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं आया है। संक्षेप में, श्रमिकों को न्याय पर भरोसा नहीं है। और अधिकतर मजदूर न्याय पाने के लिए अदालत जाने के बजाय बोरियों में अपना बिस्तर लादकर अपने गृहनगर लौटना पसंद करते हैं। इस प्रकार, 1 मई केवल मजदूर दिवस का नाम बनकर रह गया है। मजदूरों के लिए मजदूर दिवस को सही मायने में तभी सार्थक माना जाएगा जब मजदूरों का आर्थिक शोषण और अवैध रूप से बर्खास्तगी जैसी मजदूर विरोधी गतिविधियां बंद हो जाएंगी।

जब ज़मीनी हकीकत कुछ और ही बयां करती है, तो सिर्फ कागज़ पर मज़दूरों के हितों की बात करना कितना उचित है? मौजूदा हालात ऐसे हैं कि मज़दूरों के नाम पर कोई आंदोलन नहीं किया जा सकता? कोई याचिका नहीं दी जा सकती? कोई प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता? संक्षेप में कहें तो, जब किसी भी मज़दूर समर्थक गतिविधि को सख्ती से दबाया जा रहा हो, तो मज़दूर दिवस मनाने का कोई मतलब नहीं है।

दिल्ली के मुकुंदपुर लूप फ्लाईओवर के डार्क स्पॉट में दीवार से टकराई तेज रफ्तार बाइक, दो दोस्तों की मौत

बाहरी दिल्ली, एजेंसी। भलस्वा डेरी थाना अंतर्गत मुकुंदपुर लूप फ्लाईओवर के डार्क स्पाट क्षेत्र में बीती रात तेज रफ्तार स्पोर्ट्स बाइक (यामाहा आर-वन 5) अनियंत्रित होकर फ्लाईओवर की दीवार से टकरा गई। इस खौफनाक हादसे में बाइक सवार दो दोस्तों की मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि दोनों युवकों ने हेलमेट नहीं पहन रखे थे। शुरुआत में हादसे के बाद एक युवक के फ्लाईओवर के नीचे गिरने की बात सामने आई थी, लेकिन पुलिस इससे इन्कार कर रही है। हादसे जान गंवाने वाले दोनों युवक दिल्ली के संगम विहार व बवाना के रहने वाले हैं।

कोई चश्मदीद न मिलने कारण पुलिस ने डीडी एंट्री के आधार पर मुकदमा दर्ज कर केस की जांच बाहरी-उत्तरी जिला की एमएसीटी सेल को सौंप दी गई है। जिस जगह पर यह हादसा हुआ है, वह डार्क

स्पाट है। लंबे समय से लाइट नहीं हैं। यहां पहले भी कई हादसे हो चुके हैं।

दोनों मृत अवस्था में लाए गए अस्पताल : पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, रविवार रात लगभग नौ बजे बाहरी रिंग रोड पर मुकुंदपुर लूप फ्लाईओवर पर सड़क हादसे के बारे में जानकारी मिली। पुलिस को घटनास्थल पर लावारिस हालत में सफेद रंग की बाइक मिली। पूछताछ में पता चला कि हादसे में घायल दो युवकों को आस-पास के लोगों ने बाबू जगजीवन राम अस्पताल में भर्ती करा दिया। अस्पताल की ओर से बताया गया कि दोनों मृत लाया गया था। मृतकों की पहचान सैफ अली (20 साल) निवासी संगम विहार, बुराड़ी और शाहिद निवासी जेजे कालोनी बवाना के रूप में हुई। दोनों आपस में दोस्त हैं। सैफ अली पोर्टर के तौर पर काम करते थे। कल रात दोनों आदर्श नगर से संगम विहार की ओर जा रहे थे। बाहरी-उत्तरी जिला पुलिस के अधिकारी ने बताया कि डीडी एंट्री व मौके पर मिली जानकारी के आधार पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 281 और 106(1) के तहत केस दर्ज किया गया है। अभी तक मौके पर या अस्पताल से कोई चश्मदीद सामने नहीं आया है। पुलिस ने बताया कि आरंभिक जांच में दोनों युवकों के बिना हेलमेट की जानकारी सामने आई है। यह बाइक मृतक के रिश्तेदार की बताई जा रही है।

मुकुंदपुर लूप फ्लाईओवर लंबे समय से है डार्क स्पाट

बाहरी रिंग रोड पर मुकुंदपुर फ्लाईओवर क्षेत्र दिल्ली के प्रमुख डार्क स्पाट में से एक है। लंबे समय से लाइट्स खराब ही रहती हैं। राहगीरों का कहना है कि एक तो यहां डार्क स्पाट है और दूसरा गोल चक्र है। इस वजह से कई बड़े हादसों के अलावा छोटी दुर्घटनाएं तो अक्सर होती हैं। इस मार्ग से अक्सर आने-जाने वाले जगतपुर आरडब्ल्यूए अध्यक्ष विनोद कुमार का कहना है कि यहां न तो कोई संकेतक हैं और शाम होते ही अंधेरा छा जाता है। राहगीरों को परेशानी होती है। यातायात पर काम करने वाली संस्था गुरू हनुमान सोसाइटी आफ भारत के राष्ट्रीय महासचिव अतुल रणजीत कुमार ने बताया कि मुकुंदपुर फ्लाईओवर क्षेत्र लंबे समय से डार्क स्पाट है। इसके बारे में लोक निर्माण विभाग से कई बार अनुरोध किया जा चुका है। बीच-बीच में स्ट्रीट लाइट्स को ठीक कर दिया जाता है किंतु कुछ ही दिनों में पुनः यहां अंधकार छा जाता है।

सोमवार को देर शाम चली आंधी में बाहादुरशाह जफर मार्ग पर धीमी गति में गुजरे वाहन

नई दिल्ली, एजेंसी। मौसमी उतार चढ़ाव के बीच सोमवार को भी दिल्ली में भीषण गर्मी का दौर बना रहा। तेज धूप और गर्म हवा के थपेड़ों से दिल्ली वासियों का हाल बेहाल रहा। तकनीकी तौर पर लू भले नहीं चली, लेकिन तापमान ऊंचा ही दर्ज हुआ। दोपहर बाद और देर शाम मौसम ने करवट ली और 60 किमी प्रति घंटे से भी अधिक तेज रफ्तार से आंधी चलने पर थोड़ी राहत मिली। मौसम विभाग ने मंगलवार से अगले तीन दिन तक यह बदलाव बने रहने का पूर्वानुमान जारी किया है। इससे तापमान में भी कुछ गिरावट आएगी, हालांकि रहेगा यह 40 डिग्री से ऊपर ही। साफ आसमान और तीखी धूप के बीच सोमवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से 3.3 डिग्री अधिक 42.3 डिग्री दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान सामान्य से 1.2 डिग्री अधिक 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा। हवा में नमी का स्तर 60 से 20 प्रतिशत तक रिकार्ड हुआ। रिज क्षेत्र में अधिकतम तापमान सर्वाधिक 43.8 डिग्री दर्ज किया गया। आयानगर में यह 43.3 डिग्री रहा।

बदलाव का कारण साइक्लोनिक सर्कुलेशन : अपराहन पौने तीन बजे से पौने चार बजे के बीच हवा की रफ्तार सबसे ज्यादा दर्ज की गई। यह प्रगति मैदान में 61 किमी प्रति घंटा, पूसा में 54 किमी प्रति घंटा, नारायणा में 48 किमी प्रति घंटा, लोधी रोड पर 46 किमी प्रति घंटा और पीतमपुरा में 41 किमी प्रति घंटा तक रिकार्ड हुई। देर शाम भी राष्ट्रीय राजधानी में धूल भरी आंधी और तेज हवाएं चलीं। लंबे समय से चल रही लू जैसी स्थिति के बाद, मौसम विशेषज्ञों ने मध्य पाकिस्तान, उत्तर-पश्चिम राजस्थान, पंजाब और हरियाणा के ऊपर बने साइक्लोनिक सर्कुलेशन को इस बदलाव का कारण बताया है। उन्होंने कहा कि यह सर्कुलेशन देश के उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रहा है, जिससे राजस्थान से धूल और रेत आ रही है, जिसके कारण इस क्षेत्र में धूल भरी आंधी चल रही है।

तापमान में गिरावट की संभावना : स्काईमेट के महेश पलावत ने कहा, 'इस बदलाव से आने वाले दिनों में तापमान में गिरावट आने की संभावना है क्योंकि यह विक्षोभ 30 अप्रैल तक शहर को प्रभावित कर सकता है। राजस्थान और हरियाणा के कुछ हिस्सों में वर्षा हो सकती है, और यह प्रणाली जल्द ही दिल्ली पहुंचने की उम्मीद है।' मौसम विभाग के अनुसार मंगलवार को बादल छाए रहेंगे। गर्जन वाले बादल बनने, बिजली चमकने, 40 से 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज झोंकेदार हवा चलने और हल्की वर्षा होने के भी आसार हैं।

अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 42 और 27 डिग्री रहने का पूर्वानुमान है।

सोमनाथ हमारी अविरल और अविनाशी सनातन संस्कृति का आस्था केंद्र

गिर सोमनाथ एजेंसी। केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री और श्री सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी अमित शाह ने मंगलवार को ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के पवित्र स्थल का दौरा किया। आस्था, स्वाभिमान और समर्पण की त्रिवेणी जैसी इस यात्रा के दौरान उन्होंने महादेव की विशेष पूजा की और आशीर्वाद लिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमनाथ महादेव के चरणों में सिर झुकाया और ध्वजा पूजा, तग पूजा और सोमेश्वर महापूजा की। इस मौके पर उन्होंने सोमनाथ महादेव को एक खास 'मराठी तगड़ा' चढ़ाया, जिसकी खासियत यह थी कि यह तगड़ा भारतीय आजादी के सपने देखने वाले और शिव के परम भक्त छत्रपति शिवाजी महाराज के तगड़े के स्टाइल में बनाया गया था, जिसमें चांदी और कीमती कपड़ों का इस्तेमाल किया गया था। पूजा के बाद, गृह मंत्री शाह ने खुद मंदिर के शिखर पर झंडा फहराया और धर्म ध्वजा फहराई। सोमनाथ ट्रस्ट के सेक्रेटरी योगेंद्र देसाई और जनरल मैनेजर

विजय सिंह चावड़ा ने गृह मंत्री अमित शाह का स्वागत किया और उन्हें सोमनाथ महादेव का एक यादगार तोहफा देकर सम्मानित किया।. इसके साथ ही, गृह मंत्री शाह ने एक्स पर एक पोस्ट करते हुए भी इसकी जानकारी दी। उन्होंने लिखा, ''जय सोमनाथ, सोमनाथ ज्योतिर्लिंग हमारी अविरल और अविनाशी सनातन संस्कृति का आस्था केंद्र है। यह हमारे संघर्ष और पुनर्जागरण का भी प्रतिबिंब है। आज सोमनाथ महादेव के दर्शन कर सभी के सुख, समृद्धि और कल्याण की कामना की।'' श्री सोमनाथ ट्रस्ट के चेयरमैन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर ट्रस्ट ने 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व - स्पेशल महापूजा' का आयोजन किया है। इस पूजा के लिए बुकिंग की औपचारिक शुरुआत अमित शाह के हाथों से हुई। इस पूजा के लिए बुकिंग शुरू हो गई है, जो यजमान और भक्त यह पूजा करवाएंगे, वे ट्रस्ट की वेबसाइट से पूजा रजिस्टर करके पूजा का लाभ उठा सकेंगे। यह खास पूजा 11 मई, 2026 से शुरू होगी। इस खास पूजा में महादेव का पंचामृत, दूध, अनाज और पवित्र गंगाजल से महाभिषेक होगा। महादेव को धोती, उपवस्त्र, रुद्राक्ष की माला और जनेऊ चढ़ाया जाएगा और माता पार्वती को साड़ी और अखंड श्रृंगार चढ़ाया जाएगा। महामृत्युंजय मंत्र का जाप, राजभोग-थाल और दीपमाला चढ़ाना, ट्रस्ट की गौशाला में नंदी और गौ-पूजा के साथ-साथ श्रद्धालुओं की खास पूजा और ब्राह्मण भोजन भी पूजा में शामिल है। सनातन ज्ञान और भारतीय संस्कृति की शानदार विरासत को दुनिया के कोने-कोने तक फैलाने के लिए, गृह मंत्री शाह ने सोमनाथ ट्रस्ट की तिमाही ई-मैगज़ीन 'सोमनाथ व्रत' लॉन्च की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दार्शनिक नेतृत्व में तैयार की गई इस मैगज़ीन में वेदों और वेदांगों के ज्ञान और प्राचीन भारतीय जीवन दर्शन से भरे लेख शामिल होंगे। यह मैगज़ीन दुनिया भर के भक्तों के लिए सोमनाथ ट्रस्ट की वेबसाइट पर मुफ़्त में उपलब्ध होगी। यह नई पीढ़ी को मॉडर्न टेक्नोलॉजी के ज़रिए प्राचीन ज्ञान से जोड़ने की एक सराहनीय कोशिश है।गिर सोमनाथ ज़िले में ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) रोकथाम अभियान को बढ़ावा देने के लिए श्री सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा एक सराहनीय और संवेदनशील पहल की गई है। इस खास मौके पर, गृह मंत्री अमित शाह की देखरेख में ट्रस्ट द्वारा टीबी के मरीज़ों के अच्छे स्वास्थ्य और जल्दी ठीक होने के लिए खास न्यूट्रिशनल किट बांटी गईं। इस मौके पर सोमनाथ ट्रस्ट का परिवार और बड़ी संख्या में भक्त इस पवित्र मौके पर शामिल हुए।

केरल चुनाव नतीजों से पहले सियासी हलचल तेज, यूडीएफ उत्साहित तो लेफ्ट खेमे में सतर्कता

तिरुवनंतपुरम एजेंसी। । केरल विधानसभा चुनाव के नतीजों में अब सिर्फ छह दिन बाकी हैं और राज्य में सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। सार्वजनिक बयानबाजी से लेकर अंदरूनी रणनीतियों तक, विभिन्न दलों के रुख से अलग-अलग तस्वीर सामने आ रही है। 140 सदस्यीय केरल विधानसभा के लिए मतदान 9 अप्रैल को संपन्न हुआ था। अब मुकाबला मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) और विपक्ष के नेता वी.डी. सतीशन के नेतृत्व वाले कांग्रेस नीत यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) के बीच माना जा रहा है। वहीं, भाजपा नीत एनडीए, जो 2021 में अपनी एकमात्र सीट भी गंवा चुका था, इस बार त्रिशंकु जनादेश की स्थिति में अहम भूमिका निभाने की उम्मीद लगाए बैठा है।

चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों में मिले-जुले अनुमान सामने आए हैं और किसी भी दल को स्पष्ट बढ़त नहीं दिखाई गई है। हालांकि मतदान के बाद राजनीतिक माहौल में बयानबाजी तेज हो गई है। यूडीएफ खेमे में सत्ता में वापसी को लेकर खासा उत्साह नजर आ रहा है। पार्टी नेता और समर्थक खुलकर जीत का दावा कर रहे हैं। दूसरी ओर, पिनराई विजयन का खेमा चुप्पी साधे हुए है, जिससे अटकलें और बढ़ गई हैं।सोशल मीडिया भी राजनीतिक भविष्यवाणियों का बड़ा मंच बन गया है। लेफ्ट समर्थक तीसरी बार लगातार सत्ता में वापसी का दावा कर रहे हैं, जो केरल के इतिहास में पहली बार होगा। वहीं यूडीएफ समर्थक गठबंधन को बहुमत के आंकड़े 71 से काफी आगे बताते हुए 100 सीटों तक का दावा कर रहे हैं। प्रख्यात लेखक और पूर्व आईएएस अधिकारी एन.एस. माधवन ने अपेक्षाकृत संतुलित अनुमान देते हुए एलडीएफ को 75, यूडीएफ को 65 सीटें और एनडीए को शून्य सीट मिलने की संभावना जताई है।यूडीएफ खेमे में मुख्यमंत्री पद को लेकर भी अंदरूनी हलचल तेज है। वी.डी. सतीशन के समर्थकों के अलावा रमेश चेन्निथला और कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल समर्थक भी दावेदारी को लेकर सक्रिय हैं। इससे पार्टी नेतृत्व में कुछ असहजता जरूर है, लेकिन कार्यकर्ताओं के बीच जीत का भरोसा मजबूत हुआ है। अब सबकी नजर बुधवार शाम आने वाले एग्जिट पोल पर है, जो पश्चिम बंगाल और असम में मतदान खत्म होने के बाद जारी होंगे। इससे मतदाताओं के रुझान की पहली तस्वीर सामने आएगी। केरल के अंतिम नतीजे 4 मई को घोषित किए जाएंगे।

उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने तिरुमला मंदिर में किए दर्शन, देशवासियों के कल्याण की कामना की

तिरुपति एजेंसी। उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने मंगलवार को तिरुपति के निकट तिरुमला स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। आंध्र प्रदेश के बंदोबस्ती मंत्री अनम रामनारायण रेड्डी, तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के चेयरमैन बी.आर. नायडू, कार्यकारी अधिकारी मुद्दा रविचंद्र और अन्य अधिकारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। मंदिर के पुजारियों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ 'इस्तिकाफल' देकर उनका सम्मान किया। इसके बाद उपराष्ट्रपति ने ध्वजस्तंभ के समक्ष नमन किया और पूजा-अर्चना की। उन्होंने देवी वकुलामाता, भगवान विमान वेंकटेश्वर, भाष्यकार सन्निधि (आचार्यों के मंदिर) और भगवान योग नरसिम्हा स्वामी के मंदिरों में भी दर्शन किए। बाद में रंगनायकुला मंडपम में वैदिक विद्वानों ने उन्हें 'वेदाशीर्वचनम्' दिया। इस अवसर पर टीटीडी चेयरमैन और कार्यकारी अधिकारी ने उपराष्ट्रपति को भगवान की तस्वीर तथा तीर्थ प्रसाद भेंट

चंद्रबाबू नायडू, अश्विनी वैष्णव ने विशाखापत्तनम में गूगल क्लाउड एआई हब की नींव रखी

विशाखापत्तनम एजेंसी। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को गूगल क्लाउड इंडिया एआई हब की नींव रखी। इस एआई हब में गूगल करीब 15 अरब डॉलर निवेश करेगा, जो कि देश के इतिहास में आया अब तक का सबसे बड़ी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) है। भूमि पूजन समारोह में बोलते हुए चंद्रबाबू नायडू ने गूगल और परियोजना में उसके साझेदारों, अदाणीकनेक्स और एयरटेल नेक्स्ट्रा से सितंबर 2028 तक परियोजना को पूरा करके उद्घाटन करने का आग्रह किया। साथ ही, उन्होंने परियोजना के शीघ्र पूरा होने के लिए राज्य सरकार की ओर से हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।उन्होंने आगे कहा कि गूगल का यह निवेश विशाखापत्तनम के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य के

लिए एक गेम चेंजर है।उन्होंने याद करते हुए कहा कि 30 साल पहले, जब उन्होंने साइबराबाद को एक आईटी सिटी के रूप में स्थापित करने की नींव रखी थी, अब वह वेल्थ क्रिएशन का केंद्र बन गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह एशिया का सबसे बड़ा डेटा सेंटर होगा और आंध्र प्रदेश देश के लिए एआई डेटा गेटवे के रूप में उभरेगा।उन्होंने कहा, 'गूगल, जिसने एक सर्च इंजन के रूप में शुरुआत की थी, अब भारत के विकास का इंजन बन रहा है। वैसे तो हर कोई गूगल पर सर्च करता है, लेकिन इस मामले में गूगल ने सर्च किया और आंध्र प्रदेश को चुना। ' नायडू ने कहा कि विशाखापत्तनम में सभी खूबियां मौजूद हैं और इसे इस मेगा प्रोजेक्ट के लिए सबसे उपयुक्त स्थान बताया। उन्होंने आश्वासन दिया कि यहां पानी की कोई कमी नहीं है और 60 दिनों के भीतर गोदावरी नदी से शहर में पानी लाने का वादा किया। उन्होंने कहा कि सरकार अपने 'शासन की गति' को बढ़ाने के लिए गूगल एआई डेटा सेंटर का उपयोग करेगी, जिसके लिए सरकार प्रतिबद्ध है। संबोधन में बोलते हुए केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने कहा कि एक देश के रूप में भारत कई तकनीकी विकास चक्रों से चूक गया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन है कि भारत नई तकनीकी विकास प्रक्रिया में अग्रणी भूमिका निभाए।उन्होंने कहा कि 1990 के दशक और 2000 के शुरुआती वर्षों में की गई पहलों के बदौलत भारत आईटी सेवाओं का अग्रणी बन गया, लेकिन सेमीकंडक्टर, सर्वर, लैपटॉप और मोबाइल फोन के निर्माण में पिछड़ गया। हालांकि, मेक इन इंडिया पहल के शुभारंभ के साथ पिछले एक दशक में स्थिति पूरी तरह बदल गई है।उन्होंने कहा कि नगण्य इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण से आज मोबाइल फोन देश का सबसे अधिक निर्यात किया जाने वाला उत्पाद बन गया है, जिसने रत्न और आभूषण, वस्त्र और डीजल को भी पीछे छोड़ दिया है।

रुचि एक्रोनी केस में ईडी की कार्रवाई, 7.76 करोड़ की संपत्तियां कुर्क

नई दिल्ली एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के इंदौर उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने एक महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए रुचि एक्रोनी इंडस्ट्रीज लिमिटेड से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 7.76 करोड़ रुपए मूल्य की अचल संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क कर लिया है, जिसे अब स्टीलटेक रिसोर्सेज लिमिटेड के नाम से जाना जाता है। कुर्क की गई संपत्तियां कंपनी के नाम पर दर्ज भूमि के टुकड़ों के रूप में हैं। यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत की गई है। ईडी ने इस मामले में जांच की शुरुआत

सीबीआई, एसीबी भोपाल द्वारा दर्ज एफआईआर के आधार पर की थी। एफआईआर में कंपनी पर यूको बैंक, इंदौर के साथ धोखाधड़ी कर 58 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया गया था। आरोप है कि कंपनी ने बेईमानी से अपनी समूह कंपनियों में निवेश किया और सहयोगी व संबंधित संस्थाओं को ऋण और अग्रिम देकर धन का हेरफेर किया। जांच में यह भी सामने आया कि कंपनी ने क्रेडिट सुविधाएं और 'लेटर ऑफ क्रेडिट' जाली, मनगढ़ंत और हेरफेर किए गए दस्तावेजों के आधार पर प्राप्त किए, जिनके पीछे कोई वास्तविक व्यापारिक गतिविधि नहीं थी। इन माध्यमों से प्राप्त धन को योजनाबद्ध तरीके से दूसरी जगह स्थानांतरित किया गया, उसकी परतें बनाई गईं और फिर आपस में जुड़ी कंपनियों के जटिल नेटवर्क के जरिए वापस उसी उधार लेने वाली इकाई तक पहुंचाया गया। इस पूरी प्रक्रिया के माध्यम से अवैध रूप से निकाले गए धन को वैध दिखाने की कोशिश की गई और बाद में इसका इस्तेमाल विभिन्न अचल संपत्तियों की खरीद में किया गया।

भीषण गर्मी में पक्षियों का सहारा बना परिण्डा अभियान, गणपति नगर में लगाए परिण्डे

लालसोट एजेंसी। भीषण गर्मी के इस दौर में बेजुबान पक्षियों को राहत पहुँचाने के लिए अनुराग सेवा संस्थान ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए 'अनुराग परिण्डा अभियान' के तहत मंगलवार को गणपति नगरमें विभिन्न स्थानों पर परिण्डे लगाए। संस्थान के संयोजक सियाराम शर्मा ने बताया कि यह अभियान केवल परिण्डे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हीं घरों का चयन किया जा रहा है जहाँ परिवार नियमित रूप से पानी भरने का संकल्प ले रहे हैं। इस दौरान कॉलोनीवासियों ने उत्साहपूर्वक अपने घरों की छतों और बालकनी में परिण्डे लगवाए। इस पुनीत कार्य में समन्वयक सुनील सूरतपुरा, अविनाश रिवाली, दीपक सुकार सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सुदामा चरित्र के प्रसंग के साथ भागवत कथा संपन्न, हवन व भंडारे में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

लालसोट/राहुवास। उपखंड क्षेत्र के ग्राम लाहड़ी का बास में आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का मंगलवार को हवन

पूर्णाहुति और भंडारे के साथ समापन हुआ। अंतिम दिन आचार्य महेश शास्त्री ने सुदामा चरित्र की मार्मिक कथा सुनाते हुए कहा कि सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता निस्वार्थ प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण है।

कथा व्यास ने श्रद्धालुओं को नौ योगेश्वर और दत्तात्रेय के 24 गुरुओं के प्रसंग सुनाकर भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कथा के समापन पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन किया गया, जिसमें यजमानों ने आहुतियां दीं। इसके पश्चात आयोजित विशाल भंडारे में सैकड़ों ग्रामीणों ने पंगत में बैठकर प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान चतुरसिंह, घासीसिंह और सुमेर सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

बीलका में वॉलीबॉल का रोमांच : रोमांचक फाइनल में आभानेरी ने श्री बालाजी क्लब

को 1 अंक से हराया

लालसोट। ग्राम बीलका के खेल मैदान में आयोजित जिला स्तरीय सेमी शूटिंग वॉलीबॉल प्रतियोगिता का खिताब आभानेरी की टीम ने अपने नाम कर लिया है। फाइनल मुकाबले में आभानेरी ने मेजबान श्री बालाजी क्लब बीलका को 21-20 के बेहद करीबी अंतर से हराकर दर्शकों का दिल जीत लिया।

प्रतियोगिता के समापन पर मुख्य अतिथि थानाधिकारी मदन लाल ने युवाओं को खेलों के माध्यम से नशे से दूर रहने का संदेश दिया। विजेता टीम को 11,000 रुपये और उपविजेता को 5,100 रुपये नकद पुरस्कार व ट्रॉफी प्रदान की गई। व्यक्तिगत श्रेणियों में सुभाष को बेस्ट शूटर, प्रीतेश को बेस्ट डिफेंडर और निश्चल शर्मा 'गुल्ली बाहुबली' को बेस्ट नेटर के सम्मान से नवाजा गया।

टीएमसी का गढ़ अब इतिहास, पाप का घड़ा फूटने वाला है

रांची एजेंसी। झारखंड से भाजपा नेता प्रतुल शाहदेव ने बंगाल की 142 सीटों पर बुधवार को दूसरे चरण के तहत होने वाले मतदान पर कहा कि ममता बनर्जी के पाप का घड़ा अब फूटने वाला है। रांची में आईएएनएस से बातचीत में भाजपा नेता ने कहा कि जिसे टीएमसी का गढ़ बताया जा रहा है, वह इतिहास की बात हो चुकी है। पाप का घड़ा अब फूटने वाला है। अगर टीएमसी 20 से 25 सीटें भी जीत जाए तो अपनी इज्जत बचा पाएगी। तुष्टिकरण की जो राजनीति उन्होंने की है, उसे जनता कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने बंगाल को लेकर बिल्कुल सही बात की है, भाजपा की सरकार में युवाओं को रोजगार दिया जाएगा। बंगाल विकास के रास्ते पर चलेगा। भाजपा नेता प्रतुल शाहदेव ने कहा कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान का समर्थन करते हुए कहा कि वे बिल्कुल सही कह रहे हैं। भारत शुरू से ही एक हिंदू राष्ट्र रहा है। इसे अलग से घोषित करने की कोई जरूरत नहीं है। अगर आप भारत का इतिहास देखें तो वह सनातनियों के गौरवशाली इतिहास से भरा पड़ा है।

रोहित गोदारा गैंग के दो शार्प शूटर गिरफ्तार, टली बड़ी टारगेट किलिंग

अंबाला (हरियाणा)एजेंसी। हरियाणा एसटीएफ (स्त्रस्त्र) ने एक बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए कुख्यात गैंगस्टर रोहित गोदारा के दो शार्प शूटरों को सोमवार को अंबाला कैंट से गिरफ्तार किया है। पकड़े गए शूटर अंबाला या उसके आसपास किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने के लिए 'टारगेट' का इंतजार कर रहे थे। पुलिस ने इनके पास से विदेशी मार्का वाली पिस्टल और भारी मात्रा में कारतूस बरामद किए हैं। एसटीएफ को गुप्त सूचना मिली थी कि दो संदिग्ध युवक अंबाला कैंट की शास्त्री कॉलोनी के पास

अगर राहुल गांधी कहें तो सिद्धारमैया पद छोड़ने को तैयार कर्नाटक के पूर्व मंत्री राजन्ना

बेंगलुरु एजेंसी। कर्नाटक कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर चल रही खींचतान के बीच पूर्व मंत्री और कांग्रेस विधायक के.एन. राजन्ना ने एक चौंकाने वाला बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि अगर राहुल गांधी कहें, तो मुख्यमंत्री सिद्धारमैया अपने पद से हटने के लिए तैयार हैं। राजन्ना, सीएम सिद्धारमैया के करीबी सहयोगी हैं। दलित समुदाय से आने वाले मंत्री सतीश जारकीहोली और एच.सी. महादेवप्पा दिल्ली पहुंचे हैं। दोनों नेता राज्य में नेतृत्व के मुद्दे पर चल रही उलझन को खत्म करने की मांग कर रहे हैं। खास बात यह है कि ये दोनों नेता सीएम सिद्धारमैया के करीबी सहयोगी हैं। राजन्ना ने मंगलवार को बेंगलुरु में कहा कि पार्टी के भीतर नेतृत्व परिवर्तन के मुद्दे पर उलझन बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि जहां एक ओर सिद्धारमैया पद पर बने रहने के लिए तैयार हैं, वहीं अगर पार्टी आलाकमान उन्हें निर्देश देता है, तो वे पद छोड़ने के लिए भी राजी हैं।

राजन्ना ने पहले दावा किया था कि सिद्धारमैया की हालिया चुप्पी के पीछे बाहरी दबाव हो सकता है, लेकिन अब उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने इस मामले पर खुले विचारों वाला रुख अपनाया है। राजन्ना के मुताबिक, सिद्धारमैया ने संकेत दिया है कि वे राहुल गांधी की ओर से लिए गए किसी भी फैसले का पालन करेंगे और पार्टी सदस्यों से सहयोग की उम्मीद करते हैं। उन्होंने कहा कि मौजूदा अनिश्चितता को दूर करने से राज्य का भला होगा और पार्टी नेतृत्व से आग्रह किया कि वे इस उलझन को जारी न रहने दें। राजन्ना ने कहा कि यह कोई ऐसा फैसला नहीं है जिसे जल्दबाजी में लिया जाए, क्योंकि इसमें पार्टी और कर्नाटक की जनता, दोनों का भविष्य जुड़ा है। राजन्ना ने आलाकमान पर भरोसा जताते हुए कहा कि सिद्धारमैया पहले ही यह साफ कर चुके हैं कि वे राहुल गांधी के निर्देशों के अनुसार ही काम करेंगे। उन्होंने कहा कि सत्ता हमेशा किसी एक के पास नहीं रहती। जो लोग इसे खो देते हैं, वे इसे दोबारा हासिल भी कर सकते हैं। इस तरह उन्होंने मुख्यमंत्री की सोच को पार्टी नेतृत्व के प्रति पूरी तरह समर्पित बताया। इसके साथ ही राजन्ना ने यह भी कहा कि कई नेताओं ने (जिनमें वे खुद भी शामिल हैं) आलाकमान को यह संदेश दिया है कि सिद्धारमैया को ही मुख्यमंत्री पद पर बने रहना चाहिए।